शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक नेतृत्व की अनिवार्य बातें
अगुवों की पुस्तिका

आत्मिक वरदान

अध्याय 4: दृढ़ बनाने वाले वरदान

परिचय

यह अध्याय आत्मिक वरदानों के शीर्षक वाले मॉड्यूल शिष्यत्व की अनिवार्य बातों का भाग है। इसमें पवित्रशास्त्र में वर्णित आत्मिक वरदानों की विस्तृत श्रंखला की जाँच की गई है और यह बताया गया है कि विश्वासी किस प्रकार परमेश्वर और उसके लोगों की सेवा में इन वरदानों का प्रयोग कर सकते हैं। भागीदारों को उनके और उनके आस–पास के दूसरे लोगों के आत्मिक वरदानों को पहचानने के बारे में मार्गदर्शन दिया जाएगा। उन्हें परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक–दूसरे की सेवा करने और आत्मा एवं सत्य में आराधना करने के द्वारा अपने आत्मिक वरदानों का प्रयोग करने का प्रोत्साहन मिलेगा।

इच्छित श्रोता

इन अध्यायों के इच्छित श्रोता वे मसीही हैं जो अपने विश्वास में परिपक्व हो रहे हैं और ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा करना चाहते हैं। इन अध्यायों से उन कलीसियाई अगुवों को भी लाभ होगा जो लोगों को मसीही सेवा के लिए प्रोत्साहन देना चाहते हैं और अपने प्रशिक्षुओं के आत्मिक वरदानों की पहचान करना चाहते हैं।

अगुवों की पुस्तिका एक अगुवे के रूप में आपकी तैयारी में सहायता करने के लिए है। इन अध्याय रूपरेखाओं का प्रयोग www.dehindi.org पर उपलब्ध शिष्यत्व अनिवार्य कार्यक्रम की अन्य सामग्रियों के साथ किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

आत्मिक वरदान

अध्याय 4: दृढ़ बनाने वाले वरदान

उद्देश्य

इस अध्याय का उद्देश्य कलीसिया को दृढ़ बनाने वाले आत्मिक वरदानों का अनुसंधान करना है। इनमें प्रोत्साहन, चंगाई, परख, ज्ञान, भविष्यद्वाणी और रचनात्मकता शामिल है।

अगुवों के लिए टिप्पणी

प्रत्येक आत्मिक वरदान का कलीसिया में एक अद्वितीय स्थान होता है और प्रत्येक वरदान चेले बनाने के मिशन को पूरा करने में योगदान देता है। अन्य वरदानों के समान ही दृढ़ बनाने वाले वरदानों का प्रयोग भी स्वार्थी महत्वाकांक्षा की बजाय प्रेम से किया जाना चाहिए। ये वरदान कलीसिया को दृढ़ बनाते हैं और इनमें चंगाई (या अन्य आश्चर्यकर्म) और भविष्यद्वाणी जैसी सामर्थी योग्यताएँ शामिल होती हैं। यह सच है कि कुछ समुदायों में दूसरों की बजाय इन वरदानों को अधिक अनुभव किया जाता है परन्तु आवश्यकताओं में भिन्नता के कारण परमेश्वर का आत्मा "जिसे जो चाहता है बाँट देता है।" (1 कुरिन्थियों 12:11) परमेश्वर ने अपनी बुद्धि में यह नियुक्त किया है कि उसकी अधिकाँश आवश्यकताएँ दूसरों के द्वारा दी जाएँ ताकि समुदाय में हमें एक–दूसरे की आवश्यकता रहे। परमेश्वर चाहता है कि हम कलीसिया की एकता में योगदान दें और एक–दूसरे के साथ मिलकर कार्य करते हुए उसे मजबूती दें।

परिचय

समूह से पूछने के लिए निम्नलिखित में से दो या तीन प्रश्नों को चुनें।

- दोहराने के लिए, 1 कुरिन्थियों 13 क्या बताता है कि हमारे आत्मिक वरदानों का प्रयोग कैसे किया जाना चाहिए?
- एक–दूसरे से कहे जाने वाले हमारे शब्द कलीसिया की एकता को मजबूत कैसे बना सकते हैं? क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसके शब्दों से बुद्धि को प्रोत्साहन मिलता है या बुद्धि झलकती है?
- रचनात्मक कलाओं ने किन तरीकों से मसीहियों के आपके समुदाय को मजबूत बनाया है? (संगीत, दृश्य कलाओं, नाटक और लेखन पर विचार करें।)
- आज कलीसिया में भविष्यद्वाणी के संबंध में आपका अनुभव कैसा है? क्या आप यह मानते हैं कि आज भी लोगों को भविष्यद्वक्ताओं के रूप में नियुक्त किया जाता है? क्या आपने कभी किसी को सामर्थी और जीवन को परिवर्तित करने वाली बातें कहते सुना है जिसे सुनकर आपको लगा कि वे परमेश्वर की ओर से हैं?

अध्ययन

भागीदारों को निम्नलिखित बिन्दुओं के संबंध में निर्देश दें।

सिखाएँ

- **दृढ़ बनाने वाले वरदान:** परमेश्वर का प्रेम संबंधों के सन्दर्भ में दूसरों के द्वारा अनुभव किया जाता है और कलीसिया उन सदस्यों से बनी है जो एक–दूसरे के प्रति परमेश्वर के प्रेम को अभिव्यक्त करते हैं। इस कारण जब एक कलीसिया के संबंध अनुग्रह और प्रेम से भरे होते हैं तो वह कलीसिया दृढ़ होती है। दृढ़ बनाने वाले वरदान विश्वास को बनाते हैं, परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम को बढ़ाते हैं और हमें हमारे ऊपर परमेश्वर के सतत् अनुग्रह की याद दिलाते हैं। हो सकता है चरवाही या सेवा के वरदानों की तरह दैनिक आधार पर उनका प्रयोग न किया जाए परन्तु वे अद्वितीय परिस्थितियों में आत्मा की अलौकिक सामर्थ का प्रदर्शन करते हैं।

  - **इसकी आवश्यकता क्यों है:** दृढ़ बनाने वाले वरदान लोगों के विश्वास को बनाने के द्वारा कलीसिया को मजबूत बनाते हैं। वे साधारण लोगों के द्वारा अलौकिक कार्य करवाने की परमेश्वर की असाधारण सामर्थ को भी प्रकट करते हैं।

    - हम में से प्रत्येक व्यक्ति निराश हो सकता है और उसे प्रोत्साहन एवं बुद्धि की आवश्यकता पड़ सकती है।
    - कलीसिया में कई बार दिशा का अभाव होता है और भविष्यद्वाणी या बुद्धि के वरदानों से भरे लोगों द्वारा परमेश्वर का विशिष्ट सन्देश सुनाए जाने से उसे लाभ होता है। रचनात्मक कलाएँ हमारी आत्मिक दशा के बारे में हमारी जानकारी को बढ़ाती हैं और आत्मा एवं सत्य में परमेश्वर की आराधना करने की हमारी योग्यता को बढ़ाती हैं।
    - झूठे उपदेशक एक कलीसिया को नाश कर सकते हैं और परख के वरदान प्राप्त व्यक्ति झूठी शिक्षा और आत्मिक धोखे के विरूद्ध बचाव कर सकते हैं।

  - **प्रेम से प्रयोग करने पर:** लोग आत्मा की प्रेरणा के प्रति संवेदनशील होंगे और दूसरों को जीवन को परिवर्तित करने वाले सत्यों को बताने की खोज में रहेंगे। जब दृढ़ बनाने वाले वरदानों का प्रयोग प्रेम में किया जाता है तो इस वरदान वाले लोग:

    - साहस के साथ सत्य को बोलने के लिए आत्मा की क्षमता से भरे होंगे।
    - लोगों को विश्वास और परमेश्वर के अनुग्रह के ज्ञान में बढ़ते हुए देखना पसन्द करेंगे।
    - उस समुदाय से सच्चा प्रेम रखेंगे जिसे उन्होंने सुदृढ़ बनाया है।
    - आत्मा को आश्चर्यजनक तरीकों से अपने द्वारा सामर्थी कार्य करने की अनुमति देंगे।
    - सही और गलत, सच और झूठ को स्पष्टता से परख सकेंगे।

  - **स्वार्थ के साथ प्रयोग करने पर:** जब इन वरदानों को पाने वाला व्यक्ति प्रेम में कार्य नहीं करता है तो वे कलीसिया को नहीं बनाते हैं। इसके फलस्वरूप:

    - सत्य बोलते समय भी रूखे और आलोचनात्मक हो सकते हैं।
    - पवित्र आत्मा की सामर्थ को सीमित करते हैं, आश्चर्यकर्मों की संभावना को कम करते हैं।
    - रिश्तों का तनावपूर्ण होना या टूटना, स्वयं को अलग–थलग करना और विश्वासियों के बीच की एकता कम होना।
    - यह सोचते हुए घमण्ड दिखाना कि वे दूसरों से श्रेष्ठ हैं।
    - सत्य और झूठ के बीच पहचान करने में असमर्थता।

- **वरदानों की सूची:** यह बाइबल में पाए जाने चरवाही के वरदानों की एक सूची है।

कार्य:

आप अपने भागीदारों को ये रेखाचित्र उपलब्ध करवा सकते हैं। इस सामग्री को रचनात्मक रूप से प्रस्तुत करने का एक तरीका खोजें। कुछ संभावित तरीके इस प्रकार हो सकते हैं:

- दृश्य सामग्रियों या तकनीक का प्रयोग
- इन वरदानों के धर्मशास्त्रीय उदाहरणों पर आधारित कहानियाँ सुनाना
- अध्ययन के लिए भागीदारों को छोटे समूहों में बाँटना, फिर समूह या व्यक्ति के लिए इसका वर्णन करना जिसमें यह वरदान है।

प्रोत्साहन का वरदान	
यह क्या है	यह वरदान एक व्यक्ति को दूसरों पर भरोसे को मौखिक रूप अभिव्यक्त करने में समर्थ बनाता है, यह जानते हुए कि क्या कहना है और कब कहना है। यह प्रोत्साहन दूसरों में परमेश्वर के वरदानों की पहचान करता है और उन्हें उन वरदानों का प्रयोग करने की प्रेरणा देता है। यह हिचकिचाने वालों को ऊर्जा देता है, डरने वालों को मनोबल और धैर्य देता है, और सब में विश्वास को बनाता है।
मुख्य प्रेरणा	*भले कामों में लगे रहने के लिए परमेश्वर के लोगों को प्रोत्साहित देखना।*
आप कह सकते हैं	• मुझे परमेश्वर की सेवा करने वालों के प्रोत्साहन के लिए पत्र लिखना अच्छा लगता है। • अक्सर लोगों में किसी वरदान को देखने पर मैं उन्हें बताता हूँ और प्रोत्साहित करता हूँ। • मेरे शब्दों से अक्सर दूसरों को सांत्वना, दिलासा और सलाह मिलती है। • जब मैं निराश लोगों को देखता हूँ तो उन्हें यह बताने के लिए व्यवहारिक तरीकों को खोजता हूँ कि वे प्रिय हैं और उनके लिए प्रार्थना हो रही है। • मैं किसी ऐसे व्यक्ति का सामना कर सकता हूँ या चुनौती दे सकता हूँ जो उस प्रकार नहीं जी रहा है जैसे उसे जीना चाहिए और सही जीवन के लिए प्रोत्साहित कर सकता हूँ। • लोगों को मेरे पास रहना अच्छा लगता है, मैं मित्रता का आनन्द लेता हूँ। • मेरे साथ समय बिताने के बाद लोग बदल जाते हैं।
कुछ निर्बलताएँ	• मुझे अत्यधिक आशावादी या सरलतावादी होने से सावधान रहने की आवश्यकता है। • मैं कई बार जरूरत पड़ने पर सामना करने से बचता हूँ।
कलीसिया में प्रयोग	युवाओं या बच्चों की सेवकाई, काउन्सलिंग, लोगों से मुलाकात करना, लघु समूह अगुवा
धर्मशास्त्रीय वचन	इब्रानियों 10:24–25; 1 थिस्सलुनीकियों 2:11–12; प्रेरितों 15:30–32; रोमियों 12:8
धर्मशास्त्रीय उदाहरण	बरनबास (प्रेरितों 4:36; प्रेरितों 11:22–24; प्रेरितों 14:21–22)

परख का वरदान	
यह क्या है	यह वरदान एक व्यक्ति की यह देखने में सहायता करता है कि क्या सही और सच है और धोखे एवं त्रुटि से उसकी पहचान में सहायता करता है। वे झूठे शिक्षकों को पहचान सकते हैं, धोखेबाज की पहचान कर सकते हैं, यह परख सकते हैं कि पवित्र आत्मा है या दुष्टात्मा, और आत्मिक युद्ध में दूसरों का बचाव कर सकते हैं।
मुख्य प्रेरणा	*यह देखना कि लोग सही और गलत को पहचानें और परमेश्वर के लोगों की सुरक्षा करना*

आप कह सकते हैं	• जब कोई मुझे सच नहीं बताता है या आधा सच बताता है तो मैं समझ जाता हूँ। • किसी के प्रचार करते या सिखाते समय मैं गलतियों, विसंगतियों या झूठी शिक्षा को जल्दी ही पकड़ सकता हूँ। • मेरे अन्दर सही और गलत की गहरी समझ है। • मैं लोगों की सच्ची प्रेरणाओं को देख सकता हूँ चाहे उन्हें इसकी जानकारी न हो। • जब कोई परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करता है तो मैं महसूस कर लेता हूँ। • लोग सही और गलत के सवाल लेकर मेरे पास आते हैं। • मेरे अन्दर परमेश्वर की उपस्थिति और आत्मिक गतिविधि का एक उच्च अहसास है। • मैं दूसरों में आत्मिक वरदानों को देख सकता हूँ और उनके प्रयोग का प्रोत्साहन दे सकता हूँ। • जब कोई व्यक्ति किसी आत्मिक अनुभव का वर्णन करता है तो मुझे पता चल जाता है कि यह वास्तव में परमेश्वर की ओर से है या नहीं। • मेरी सोच प्रभावी और सटीक रही है। • मुझे कई बार किसी स्थान या लोगों में दुष्टात्मा की उपस्थिति का अहसास होता है।
कुछ निर्बलताएँ	• दूसरों का सामना करते समय मुझे रूखा नहीं होना चाहिए बल्कि प्रेम से बात करनी चाहिए। • कई बार मुझे जो समझ में आता है उसे बताने में मुझे परेशानी होती है।
कलीसिया में प्रयोग	पुरनिए, प्रार्थना सेवकाई, काउन्सलिंग, लघु समूह अगुवा, शिक्षक
धर्मशास्त्रीय वचन	रोमियों 12:2; 1 कुरिन्थियों 12:10; 1 यूहन्ना 4:1–6; मत्ती 16:21–23; होशे 14:9
धर्मशास्त्रीय उदाहरण:	बिरीया के लोग (प्रेरितों 17:11); यीशु (मत्ती 16:23); पौलुस (प्रेरितों 16:16–18)

रचनात्मक संवाद का वरदान	
यह क्या है	यह वरदान एक व्यक्ति को प्रभावी रूप से सत्य को बताने और कला के विविध रूपों के द्वारा लोगों को परमेश्वर की गहरी समझ की ओर आकर्षित करने में समर्थ बनाता है। इन कला के रूपों में संगीत रचना या प्रदर्शन, दृश्य कला, लेखन या कहानी बताना, नाटक या अन्य रचनात्मक गतिविधियाँ शामिल हैं जिनके द्वारा श्रोताओं को आत्मिक उन्नति, भरोसा, आशीष और मार्गदर्शन मिलता है। ये कलीसिया में सामूहिक आराधना में योगदान करते और उसके बढ़ावा देते हैं।
मुख्य प्रेरणा	*यह देखना कि लोग परमेश्वर के सत्यों को नए तरीकों से जानें*
आप कह सकते हैं	• मेरे अन्दर कलाओं के लिए एक जोश है और उससे मुझे आनन्द मिलता है। • जब मैं अपनी कला का अभ्यास करता हूँ तो मुझे लगता है कि मैं परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा कर रहा हूँ। • मुझे शब्दों, संगीत या दृश्य माध्यमों के संबंध में अत्यधिक हुनर मिला है। • मैं जानता हूँ कि खूबसूरती परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है और खूबसूरत कला से उसे आदर मिलता है। • लोग मुझे बताते हैं कि मेरे कार्यों से उन्हें परमेश्वर के सत्यों को नए तरीकों से जानने में सहायता मिलती है। • मैं जानता हूँ कि मैं अपनी संगीत की योग्यताओं का प्रयोग परमेश्वर की आराधना की प्रेरणा में कर सकता हूँ। • मैं जानता हूँ कि कहानी, गीत या चित्र कई सत्यों को इस प्रकार सीखा सकते हैं जैसा एक प्रचार नहीं कर सकता है। • मुझे आराधना सभाओं के दौरान मेरे वरदान का प्रयोग करने के लिए कहा जाता है।

कुछ निर्बलताएँ	• मुझे अपने वरदान से लोगों को प्रभावित करने की परीक्षा से सावधान रहना चाहिए। • मेरे लिए मेरे कार्य की रचनात्मक आलोचना को स्वीकार करना कठिन हो सकता है। • जो लोग मेरे वरदान को नहीं समझते हैं उनके साथ मैं अधीर हो सकता हूँ।
कलीसिया में प्रयोग	आराधना अगुवा, संगीतकार, भवन डिजाइन, कलाकार, लेखक, नाटककार, नाट्य सेवकाई, गीतकार, पत्रकार, आराधना स्थल की डिजाइन।
धर्मशास्त्रीय वचन	भजन 50:2; भजन 33:3; 1 इतिहास 16:29; कुलुस्सियों 3:16; निर्गमन 26:1
धर्मशास्त्रीय उदाहरण	बसलेल (निर्गमन 35:30–35); राजा दाऊद (1 शमूएल 16:18, 23)

ज्ञान और बुद्धि का वरदान

यह क्या है	यह वरदान एक व्यक्ति को परमेश्वर के वचन और उसके मार्गों की अलौकिक बुद्धि और ज्ञान को व्यक्त करने में समर्थ बनाता है। वे उसके वचन को आसानी से समझ सकते हैं, सत्यों को याद कर उन्हें लागू कर सकते हैं और इस जानकारी को दूसरों के सामने प्रस्तुत करने की योग्यता रखते हैं। यह परिस्थितियों और समस्याओं से बुद्धि के साथ बोलने और धर्मशास्त्रीय शिक्षा को लागू करने की परमेश्वर द्वारा दी गई योग्यता है।
मुख्य प्रेरणा	*परमेश्वर के वचन को जानना और उसे प्रकट करना।*
आप कह सकते हैं	• मेरे अन्दर बाइबल और सत्य की गहराई में उतरने के प्रति गहरा प्रेम है। • मुझे नए विचारों और तथ्यों को सीखना अच्छा लगता है। • मैं अपना अत्यधिक समय पढ़ने में, विशेषत: परमेश्वर के वचन को पढ़ने में बिताता हूँ। • मेरे अन्दर उसे आसानी से याद करने की योग्यता है जिसे मैं ने अतीत में सीखा है। • मैं बाइबल के सत्य को दैनिक जीवन की परिस्थितियों में लागू कर सकता हूँ। • मैं परिस्थितियों को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखता हूँ। • मैं जानकारियों को खोजना और उन्हें प्रभावी रूप से व्यवस्थित करना जानता हूँ। • मैं अक्सर कुछ 'जानता' हूँ परन्तु यह नहीं जानता कि मुझे उसकी जानकारी कैसे मिली। • कई बार मुझे किसी समस्या या परिस्थिति के बारे में ऐसा ज्ञान होता है जिसे मैं परमेश्वर के पवित्र आत्मा के बिना नहीं जान सकता था। • मैं कार्यों के परिणामों को देख सकता हूँ और जानता हूँ कि आगे क्या करना है। • मेरे अन्दर चेलों के परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ने का जोश है। • मैं सामान्यत: किसी समस्या के आत्मिक कारण और समाधान को देख सकता हूँ।
निर्बलता के क्षेत्र	• मुझे इस बात से सावधान रहना होगा कि मैं उन लोगों को तुच्छ न जानूँ जिनमें यह वरदान नहीं है। • मुझे कई बार यह जानने कि जरूरत है कि कब मैं बोलने की बजाय सुनूँ। • मुझे सत्य के स्रोत के रूप में निरन्तर बाइबल का अध्ययन करते रहना चाहिए।
कलीसिया में प्रयोग	काउन्सलिंग, कलह समाधान, शिष्यत्व का निदेशक, लघु समूह अगुवा, शिक्षक, पुरनिया, लेखक, परामर्शदाता, पासबान, कलीसियाई पुस्तकालयाध्यक्ष
धर्मशास्त्रीय वचन	याकूब 1:5; 1 कुरिन्थियों 1:18–31; 1 कुरिन्थियों 1:4–7; नीतिवचन 1:7; 1 कुरिन्थियों 8:1; 1 कुरिन्थियों 3:18–19; कुलुस्सियों 1:9
धर्मशास्त्रीय उदाहरण	सुलैमान (1 राजा 3:9–13); दानिय्येल (दानिय्येल 2:23)

चंगाई और आश्चर्यकर्मों का वरदान

यह क्या है	ये वरदान लोगों को अपनी प्रार्थना या कार्यों के द्वारा पवित्र आत्मा द्वारा किए जाने वाले

	अलौकिक चंगाई और चमत्कारों को करने में समर्थ बनाते हैं। चंगाई और चमत्कार करने की सामर्थ केवल परमेश्वर की ओर से है, किसी व्यक्ति में नहीं है– वे केवल एक माध्यम हैं। ये वरदान शारीरिक या आत्मिक चंगाई का रूप ले सकते हैं और इनमें दूसरे आश्चर्यकर्म भी शामिल होते हैं।
मुख्य प्रेरणा	*परमेश्वर की सामर्थ को आश्चर्यजनक रूप से कार्य करते देखना*
आप कह सकते हैं	• मेरी प्रार्थना के द्वारा मैं ने लोगों को बीमारी से चंगाई पाते देखा है। • मुझे कई बार बताए बिना पता चल जाता है कि कोई बीमार है। • मुझे बीमार, पीड़ित या तनावग्रस्त लोगों के लिए प्रार्थना करने की प्रेरणा महसूस होती है। • मुझे टूटे लोगों पर गहरा तरस आता है और मैं चाहता हूँ कि परमेश्वर उन्हें पहले जैसा बनाए। • जब मैं किसी को कष्ट सहते देखता हूँ तो परमेश्वर से उनकी चंगाई माँगता हूँ और पूरी उत्साह से उनके लिए प्रार्थना करता हूँ। • मेरी प्रार्थना के उत्तर में मैं ने परमेश्वर को आश्चर्यकर्म करते हुए देखा है। • लोग मुझे नियमित रूप से उनकी आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करने के लिए कहते हैं और हम परमेश्वर को उन प्रार्थनाओं का उत्तर देते हुए देखते हैं। • मुझे विश्वास है कि परमेश्वर अपनी इच्छानुसार आश्चर्यजनक रूप से चंगाई दे सकता है या पारम्परिक दवाईयों के प्रयोग द्वारा।
निर्बलता के क्षेत्र	• मुझे हमेशा यह याद रखने की आवश्यकता है कि चंगाई परमेश्वर देता है, न कि मैं। • जब परमेश्वर किसी को चंगाई नहीं देता है तो मैं सन्देह और निराशा महसूस कर सकता हूँ।
कलीसिया में प्रयोग	प्रार्थना सेवकाई, मिलने जाना, पुरनिया या पासबान, चिकित्सकीय सेवकाई
धर्मशास्त्रीय वचन	प्रेरितों 3:1–10; प्रेरितों 5:12–16; 1 कुरिन्थियों 12:9, 28
धर्मशास्त्रीय उदाहरण	पतरस और यूहन्ना (प्रेरितों 4:5–22)

भविष्यद्वाणी का वरदान

यह क्या है	यह वरदान एक व्यक्ति को तुरन्त परमेश्वर से एक सन्देश पाने और उसे बताने या एक विशेष सत्य को प्राप्त करने और उसे कलीसिया के निर्माण के लिए उपयुक्त तरीके से बताने में समर्थ बनाता है। यह सार्वजनिक सन्देश या लोगों के बीच निजी बातचीत के रूप में हो सकता है परन्तु यह कभी भी बाइबल का विरोध करता या उसमें कुछ बढ़ाता नहीं है। गलती और दुविधा की प्रवृत्ति वाले मनुष्य द्वारा की जाने के कारण भविष्यद्वाणी का अधिकार परमेश्वर के वचन से सिखाने के समान नहीं है और परिपक्व विश्वासियों द्वारा उसकी पुष्टि की जाती है कि वह सही है या नहीं।
मुख्य प्रेरणा	*जीवनों को परिवर्तित होते हुए देखने के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए सत्य की घोषणा करना*
आप कह सकते हैं	• मैं परमेश्वर के सत्य को बोलने और लोगों को पाप का बोध कराने से हिचकिचाता नहीं हूँ। • कई बार किसी व्यक्ति या परिस्थिति के बारे में मुझे कोई विशेष ज्ञान मिलता है और मेरे लिए परमेश्वर के सन्देश को बताना जरूरी है। • कई बार मुझे परमेश्वर दूसरों को बताने के लिए चेतावनियाँ देता है। • मुझे कुछ कहने या करने की दैवीय प्रेरणा मिलती है।

	• लोग कहते हैं कि मेरे शब्दों का उन पर अक्सर मेरे अहसास से भी अधिक प्रभाव होता है और उसके फलस्वरूप उन्होंने अपने व्यवहार या दृष्टिकोण को बदल लिया है। • मेरे शब्दों की अक्सर परिपक्व मसीहियों द्वारा पुष्टि की जाती है। • मुझे कई बार किसी व्यक्ति के अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में जानकारी मिलती है जिसे मैं परमेश्वर के पवित्र आत्मा के बिना नहीं जान सकता था। • मुझे कई बार किसी स्वप्न का अर्थ बताया जाता है। • मैं पाप से गहरी नफरत करता हूँ और उसे देखने पर खुलकर उसका नाम लेता हूँ। • मैं अपने सन्देशों और शिक्षाओं के सत्यापन के लिए बाइबल पर निर्भर हूँ। • लोग मुझ से पूछते हैं, "आपको वही बात कैसे पता चली जिसे मुझे सुनने की आवश्यकता थी?" या "आपको मेरे बारे में यह बात कैसे पता चली?" • मैं अपनी स्वयं की टूटी हुई दशा और असफलता को दिखाने के लिए तैयार हूँ ताकि दूसरों को सत्य की गहरी समझ मिल सके।
निर्बलता के क्षेत्र	• मुझे पाखण्ड या अनाज्ञाकारिता में जीवन बिताने के विरूद्ध सावधान रहने की आवश्यकता है। • मुझे अपने शब्दों को अत्यधिक अधिकार देने के बारे में सावधान रहना चाहिए क्योंकि मैं गलत हो सकता हूँ। सच्ची भविष्यद्वाणियों की पुष्टि दूसरों द्वारा की जाती है।
कलीसिया में प्रयोग	सुसमाचारक, उपदेशक या वक्ता, पुरनिया, पासबान, लेखक, काउन्सलर
धर्मशास्त्रीय वचन	2 पतरस 1:20–21; 1 कुरिन्थियों 12:29–31; लूका 7:26; रोमियों 12:6
धर्मशास्त्रीय उदाहरण	अगबुस (प्रेरितों 11:28; प्रेरितों 21:10–14); पतरस (मत्ती 16:15–16; 2 पतरस 1:16–21)

❖ **उपसंहार:** कलीसिया को बहुत से वरदान दिए गए हैं परन्तु दृढ़ बनाने वाले वरदान कलीसिया को प्रोत्साहन देते हैं और अपने मिशन को पूरा करने के लिए उसे नया दर्शन देते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि इन सारे वरदानों का प्रयोग मसीही समुदाय में दूसरों के साथ मिलकर प्रेम से किया जाए। कई बार ये वरदान जटिल हो सकते हैं या इन्हें गलत समझा जा सकता है परन्तु परमेश्वर के राज्य के लिए उनका अत्यधिक महत्व है!

कार्य:

एक समूह के रूप में दृढ़ बनाने वाले वरदानों को प्रदर्शित करने वाले व्यक्तियों की पहचान करें और उनके लिए प्रार्थना करें। विशेष रूप से उपरोक्त शिक्षण रेखाचित्रों में बताई गई निर्बलताओं के क्षेत्रों के लिए प्रार्थना करें और आपकी कलीसिया या समुदाय में विभिन्न सेवकाईयों में सेवा करने वालों को प्रोत्साहित करने के लिए पत्र लिखें।

विचार–विमर्श

❖ आप अपने समुदाय में कहाँ लोगों को दृढ़ बनाने वाले वरदानों का प्रयोग करते हुए देखते हैं?

❖ 1 कुरिन्थियों 12:30–31 में पौलुस का क्या अर्थ है जब वह कहता है, "बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहो?" कौन से वरदान बड़े हो सकते हैं?

- चंगाई और आश्चर्यकर्मों के वरदान (जिनके लिए हम परमेश्वर पर निर्भर होते हैं कि वह अपने अनुग्रह के माध्यम के रूप में हमारा प्रयोग करे) उन वरदानों से किस प्रकार भिन्न हैं जिन्हें हम प्रयोग करने के लिए चुनते हैं, जैसे प्रोत्साहन या शिक्षा?

- जब एक व्यक्ति को कोई वरदान मिलता है और वह उसका प्रयोग नहीं करता तो क्या होता है?

- यदि आपके समूह में संगीतकार हैं तो उनसे पहले से विनती करें कि वे आत्मिक गीतों या भजनों को गाने में समूह की अगुवाई करने के लिए तैयार रहें। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपके भागीदारों के द्वारा कलीसिया को दृढ़ बनाए और प्रोत्साहन दे, विशेषतः उस समय जब वे अपने वरदानों का प्रयोग करते हैं।

प्रार्थना

प्रार्थना के साथ अध्याय को समाप्त करें। कलीसिया के लिए, परमेश्वर के होने के लिए, और एक–दूसरे के साथ समुदाय का आनन्द लेने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें। प्रार्थना करें कि जब हम एक–दूसरे को हमारे वरदानों का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं तो उसके द्वारा कलीसिया में दृढ़ता और एकता आए। प्रार्थना करें कि भविष्यद्वाणिक सन्देशों और बुद्धि के वचनों के वरदान प्राप्त लोग साहस के साथ उन्हें मिले वचनों की घोषणा करें, कलात्मक हुनर वाले लोग रचना करने और सुन्दरता एवं सत्य को बाँटने के लिए प्रेरित हों, और जिनमें प्रोत्साहन एवं परख का वरदान है वे उनका प्रयोग मसीह की देह के अन्दर संबंधों को मजबूत बनाने के लिए करें।